ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 137-140

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

पूर्वांचल की प्राचीन बौद्ध विरासत : एक समग्र अवलोकन

डॉ0 राकेश कुमार सिंह

असि0 प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, बाबा राघवदास भगवानदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय आश्रम बरहज, देवरिया (उ0प्र0), भारत

Received-04.06.2024, Revised-11.06.2024, Accepted-17.06.2024 E-mail: rakeshsinghrakesh586@gmail.com

सारांश: *पूर्वांचल उत्तर मध्य भारत का एक भौगोलिक क्षेत्र है, जो उत्तर प्रदेश के पूर्वी छोर पर स्थित है। यह उत्तर में नेपाल पूर्व में बिहार, दक्षिण में मध्य प्रदेश के बघेलखण्ड क्षेत्र और पश्चिम में उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र से घिरा है। इसमें वर्तमान में अयोध्या, आजमगढ़, बस्ती, देवीपाटन, गोरखपुर, मिर्जापुर, प्रयागराज और वाराणसी मण्डल शामिल हैं। इस कुल आठ मण्डलों के 26 जिलों से यह पूर्वांचल क्षेत्र निर्मित है। पूर्वांचल भारत के सबसे प्राचीन क्षेत्रों में से एक है। इसकी समृद्ध विरासत एवं संस्कृति है, विशेष रूप से कुछ ऐतिहासिक स्थलों के साथ इसके जुड़ाव के कारण इसे 'योद्धाओं की भूमि' के नाम से जाना जाता है। सभी तीन प्रमुख प्राचीन भारतीय धर्म: हिन्दू, बौद्ध एवं जैन धर्म की उत्पत्ति इसी क्षेत्र में मानी जाती है।*

प्राचीन भारत के इतिहास में छठी शताब्दी ई0पू0 का काल बौद्धिक एवं धार्मिक क्रान्ति का काल था। इस कालखण्ड में बौद्ध और जैन जैसे श्रमण परम्परा के दो मुख्य मतों का अभ्युदय हुआ। इसमें भी बौद्ध मत भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों तक फैल गया। आज विश्व के अनेक देशों में यह मत राजधर्म का स्थान प्राप्त कर चुका है। बौद्धमत के प्रणेता महात्मा बुद्ध ने बोधगया में ज्ञान–प्राप्ति के पश्चात् जिन–जिन स्थलों का भ्रमण किया, वे सभी स्थल कालान्तर में बौद्ध तीर्थों के रूप में प्रसिद्ध हुए। इन स्थलों में लुम्बिनी, जहां बुद्ध ने जन्म लिया, कपिलवस्तु, जहां उनका बाल्यकाल एक राजकुमार के रूप में बीता, बोधगया जहां बुद्ध ने ज्ञान (बुद्धत्व या सम्बोधि) प्राप्त किया, सारनाथ जहां तथागतबुद्ध ने सर्वप्रथम अपना ज्ञान पंचवर्गीय भिक्षुओं को दिया और कुशीनगर, जहां बुद्ध ने महापरिनिर्वाण की प्राप्ति की, प्रमुख है। इनके अतिरिक्त श्रावस्ती, संकिसा, कौशाम्बी जैसे अन्य स्थल भी है जहाँ बुद्ध ने भ्रमण किया था। ये सभी स्थल आज बौद्ध विरासत के रूप में भारत सरकार द्वारा चिन्हित कर संरक्षित है।

कुंजीभूत शब्द– *भौगोलिक क्षेत्र, वर्तमान, पूर्वांचल क्षेत्र, विरासत, ऐतिहासिक स्थलों, जैन धर्म, धार्मिक क्रान्ति, कालखण्ड।*

प्रस्तुत शोध–पत्र में पूर्वांचल के बौद्ध विरासत का ही अध्ययन किया जाना है, जिसका विवेचन अग्रलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत है :

1. लुम्बिनी– यह स्थान उत्तर प्रदेश की उत्तर पूर्वी सीमा के निकट नेपाल की तराई में स्थित है। लुम्बिनी को 'रूम्मिनदेई' के नाम से भी जाना जाता है। यहां से मौर्य सम्राट अशोक का एक लेख मिला है, जिसमें कहा गया है कि अपने शासनकाल के बीसवें वर्ष (249 ई0पू0) में सम्राट अशोक ने यहां की यात्रा की थी तथा यहां के लोगों का कर–भार कम किया था। पांचवी शताब्दी ई0 में फाह्यान और 746 ई0 में 'वु–कुंग' नामक एक चीनी यात्री लुम्बिनी आया था। सातवीं शताब्दी ई0 में हवेनसांग यहां की यात्रा किया था, जिसने अपने यात्रा–विवरण में अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भ, सरोवर, स्तूप इत्यादि का वर्णन किया है। 1896 ई0 में ब्रिटिश भारत के एक प्रतिष्ठित पुरातत्व सर्वेक्षणकर्ता डॉ0 एलोइस एन्टन फ्यूहरर द्वारा की गयी पुरातात्विक खुदाई में अशोक स्तम्भ की खोज हुई, जिसने लुम्बिनी को भगवान शाक्यमुनि बुद्ध के जन्मस्थान के रूप में फिर से स्थापित किया।[1] वर्तमान समय में यूनेस्को ने इस स्थल को ऐतिहासिक महत्व की वैश्विक धरोहर घोषित किया है।

2. कपिलवस्तु (पिपरहवा)– यह स्थल उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी0 तथा गोरखपुर जिला मुख्यालय से 105 किमी0 की दूरी पर स्थित है। 1898 ई0 में डब्ल्यू0सी0 पेपे, जो बर्डपुर के तत्कालीन जमींदार थे, को यहां के उत्खनन से एक धातुकलश मिला था, जिसमें ब्राम्ही लिपि में एक अभिलेख "सुकिति भतिनं सभगिनिंक सपुत दलनं इयं सलिल निधने बुघस भगवते सकियानं" अर्थात् "भगवान बुद्ध के भस्मावशेषों पर यह स्मारक शाक्यवंशी सुकिती भाईयों, उनकी बहनों, बच्चों और स्त्रियों ने प्रतिस्थापित किया," अंकित है। 1872–73 ई0 में श्री कृष्ण मुरारी श्रीवास्तव ने यहां पर खुदाई करवायी थी, जिससे यहां से 'कपिलवस्तु' नाम के लिखित काफी संख्या में मिट्टी की मुहरे मिली है। अब यह प्रमाणित हो चुका है कि पिपरहवा ही प्राचीन शाक्य वंश की राजधानी थी। यही कपिलवस्तु था और जहाँ से प्राप्त मुहरें, मृद्भाण्ड, स्तूप, अस्थिपात्र यहां के पुरातात्विक महत्व पर प्रकाश डालते है। यहां से प्राप्त स्तूप का व्यास 116 फुट है और ऊँचाई 21 फुट है। स्तूप में 16 इंच लम्बी और 10 इंच चौड़ी ईट का प्रयोग हुआ है। चीनी यात्री फाह्यान एवं ह्वेनसांग ने भी इस स्थान की यात्रा की थी। ह्वेनसांग लिखता है कि राजधानी कपिलवस्तु नष्ट हो चुकी है और खण्डहर बन गई है।[2] बुद्धचरित में कपिलवस्तु को 'कपिलस्यवस्तु तथा ललितविस्तर और त्रिपिटक में 'कपिलपुर' भी कहा गया है। बौद्ध साहित्य से यह ज्ञात होता है कि कपिलवस्तु 'कपिल' नाम ध्रऋषि से सम्बन्धित था।

3. सारनाथ– वर्तमान वाराणसी जनपद में स्थित यह स्थल जिला मुख्यालय से 10 किमी0 की दूरी पर स्थित है। बौद्ध ग्रन्थों में इसका प्राचीन नाम इतिपत्तन (ऋषि पत्तन) तथा मिगदाव (मृगदाव) भी मिलता है। यही पर बुद्ध ने बोधगया में ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् सर्वप्रथम अपना प्रथम उपदेश कौडिन्य तथा उसके चार साथियों (वप्प भद्दीय, महानाम और अश्वजीत) को दिया था, जिसे बौद्ध ग्रंथो में 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहा गया है। काशी नगरी के प्रसिद्ध श्रेष्ठी नन्दी ने यहां महात्मा बुद्ध के लिए एक विहार बनवाया था। मौर्य सम्राट अशोक ने अपने धर्मगुरू उपगुप्त के साथ यहां आकर स्तूप एवं स्तम्भ बनवाये थे। इसमें धर्मराजिका स्तूप एवं सिंहशीर्ष स्तम्भ सर्वाधिक प्रसिद्ध है। सिंह शीर्ष के फलक पर चार सिंह परस्पर पीठ सटाये चारों दिशाओं में मुँह करके बैठे हैं। भारत का यही राज चिन्ह

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

भी है। चीनी यात्री फाह्यान एवं ह्वेनसांग दोनों ने सारनाथ का उल्लेख अपने यात्रा वृतान्त में किया है। 1836 ई0 में कनिघम तथा 1901 ई0 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की देख–रेख में सारनाथ का विस्तृत उत्खनन कराया गया। उत्खनन के परिणामस्वरूप चौखण्डी स्तूप, धर्मराजिका स्तूप, धमेख स्तूप, अशोक स्तम्भ, स्तम्भ का सिंहशीर्ष, धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा की बुद्ध प्रतिमा, तारा एवं बौद्ध देवी–देवताओं की अनेक मूर्तियां मिली है।

4. श्रावस्ती– यह स्थल उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी0 लखनऊ जिला मुख्यालय से 175 किमी तथा बहराईच से 40 किमी की दूरी पर बलरामपुर, बहराईच मार्ग पर स्थित है। वर्तमान समय में यह स्थल जिले के रूप में मान्यता प्राप्त है। प्राचीन काल की अचिरावती (राप्ती) नदी के दक्षिणी दिशा में स्थित सहेत–महेत (सेठ–महेठ) नाम स्थल ही आज का श्रावस्ती नगर है। यह प्राचीन कोशल साम्राज्य की राजधानी थी और बौद्ध धर्मावलम्बियों के लिए एक पवित्र स्थान माना जाता है। महापरिनिब्बानसुत्त के अनुसार इसे बुद्धकालीन भारत के छः महानगरों–चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, कोशाम्बी और वाराणसी में से एक माना जाता था। बुद्ध ने अपने जीवन के अन्तिम 25 वर्षो के वर्षावास श्रावस्ती में ही व्यतीत किये थे।[3] यह नगर कपिलवस्तु, कुशीनगर, पावा, वैशाली, राजगृह, प्रतिष्ठान, तक्षशिला, वाराणसी, सोपारा जैसे प्रसिद्ध नगरों से व्यापारिक मार्गो के माध्यम से जुड़ा हुआ था। अनाथपिण्डक एवं सुदत्त जैसे करोड़पति श्रेष्ठि श्रावस्ती में रहते थे। महात्मा बुद्ध के पहली बार श्रावस्ती आगमन पर कोशल नरेश प्रसेनजित ने अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।[4] राजाश्रय प्राप्त होने के कारण श्रावस्ती में बुद्ध के अनुयायियों की संख्या काफी बढ़ गयी। शीघ्र ही यह स्थल बौद्धकेन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हो गया। बौद्ध ग्रन्थों में श्रेष्ठि अनाथपिण्डिक द्वारा राजकुमार जेत का उद्यानवन स्वर्णमुद्राओं को बिछाकर क्रय करने और बौद्ध संघ को दान कर दिये जाने का उल्लेख मिलता है। इसका अंकन भरहूत स्तूप की वेष्टिनी पर हुआ है। यह नगर परिखा (खाई), प्राकार (चाहरदीवारी), भवन, उद्यान, कूप, जलाशय, मण्डप, परिवेण (विश्रामगृह) आदि से सुसज्जित था। यहाँ के तीन प्रसिद्ध स्थान–जेतवन, पूर्वाराम एवं मल्लिकाराम थे तथा गंधकुटीर, करेरि कुटीर तथा कौशाम्बी कुटीर तीन विशाल भवन थे, जिन्हें बौद्ध ग्रन्थों में 'महागेह' कहा गया है। इसके अतिरिक्त यह नगर सुन्दर भवनों, विहारों एवं स्तूपों से सुसज्जित था। बौद्ध ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि इस नगर के निर्माण में अनाथपिण्डक ने 54 करोड़ तथा श्रेष्ठि मिनार की पुत्रवधू विशाखा5 ने 26 करोड़ मुद्राएँ व्यय किया था। कोशल नरेश प्रसेनजित तथा रानी मल्लिका ने यहाँ अनेक भवनों एवं विहारों का निर्माण कराया था। संयुक्त निकाय के अनुसार प्रसेनजित ने यहां एक भिक्षुणी विहार बनवाया था। महाप्रजापति गौतमी के आग्रह पर एक बार भगवान बुद्ध ने यहाँ धर्मोपदेश दिया था।[6] भिक्षुणी बन जाने के बाद प्रसेनजित की बहन 'सुमाना'[7] ने यहां निवास किया था।

दिव्यावदान के अनुसार श्रावस्ती में चार स्तूप थे, जिनका निर्माण सारिपुत्र, मौद्गल्यायन, महाकश्यप एवं आनन्द के सम्मान में किया गया था। मौर्य सम्राट अशोक श्रावस्ती की धार्मिक यात्रा में इन चारों स्तूपों की पूजा की थी। मगध साम्राज्य के उत्कर्ष एवं कोशल राज्य के पतन के साथ श्रावस्ती का भी पतन प्रारम्भ हो गया। क्रमशः यह नगर खण्डहर में परिवर्तित होता गया। चीनी यात्री फाह्यान तथा ह्वेनसांग ने अपने यात्रा–विवरणों में श्रावस्ती के खण्डहरों तथा सम्राट अशोक द्वारा बनवाये गये द्वार–स्तम्भों का उल्लेख किया है। बारहवीं शताब्दी ई0 के गाहड़वाल नरेश मदनपाल एवं गोविन्दचन्द्र ने श्रावस्ती के विहारों को दान देकर उन्हे पुनर्प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया।[8]

वर्तमान में श्रावस्ती की ऐतिहासिकता का उद्घाटन जनरल कनिंघम के 1862–63 ई0 के सर्वेक्षण एवं उत्खनन कार्य से प्रारम्भ हुआ। कनिंघम ने 'महेठ' की पहचान श्रावस्ती के रूप में तथा सहेठ की पहचान जेतवन के रूप में की। खुदाई में यहां से बोधिसत्व की 7 फीट 4 इंच ऊँची प्रतिमा मिली। पुनः 1876 ई0 में कनिंघम ने खुदाई करवाई तथा गंध कुटीर एवं कोसम्ब कुटीर की पहचान सुनिश्चित की। 1987 से 2001 ई0 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एवं कंसाई वि0वि0 जापान के सम्मिलित सर्वेक्षण एवं उत्खनन में यहाँ प्राकमौर्यकाल से गुप्तोत्तर काल तक निर्मित स्तूप, संघाराम, विहार, सघ्ड़क, मन्दिर एवं आवासीय भवनों के अवशेष प्रकाश में आये।

5. कौशाम्बी– कौशाम्बी (उपनाम–कोसम) वर्तमान प्रयागराज जिला मुख्यालय से 55 किमी0 दक्षिण–पश्चिम में यमुनानदी के बायें तट पर स्थित है। यह आज एक जनपद के रूप में अस्तित्वमान है। कौशाम्बी जनपद के दक्षिण में चित्रकूट जनपद, उत्तर में प्रतापगढ़, पूर्व में प्रयागराज एवं पश्चिम दिशा में फतेहपुर जनपद अवस्थित है। पुराणों के अनुसार हस्तिनापुर नरेश निचक्षु, जो राजा परीक्षित के वंशज (युधिष्ठिर की सातवी पीढ़ी में) थे, हस्तिनापुर के गंगा द्वारा बहा दिये जाने पर अपनी राजधानी वत्स देश की कौशाम्बी नगरी में बनाई थी। इसी वंश की 26वीं पीढ़ी में बुद्ध के समय में कौशाम्बी के राजा उदयन थे। जातक कथाओं एवं बौद्ध साहित्य में इसका वर्णन अनेक बार हुआ है। ऐतिहासिक युग के प्रारम्भ में यह कौशाम्बी नगर 'वत्स' महाजनपद की राजधानी थी, जहां उदयन शासन करता था। माना जाता है कि महात्मा बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के छठें एवं नवें वर्ष यहां भ्रमण करने आये थे। महात्मा बुद्ध के लिए यहाँ कुक्कुटाराम, घोषिताराम नामक विहारों का निर्माण कराया गया था। यह पालि साहित्य में वर्णित छठी शताब्दी ई0पू0 के छः प्रसिद्ध नगरों में से एक था।

1861 ई0 में कनिधम महोदय ने इस स्थान की यात्रा कर इसके पुरातात्विक महत्व की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया था। 1936–37 ई0 में एन0जी0 मजूमदार ने यहाँ खुदाई करवाई थी। तत्पश्चात् 1949 ई0 से 1965–66 ई0 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के स्व0 जी0 आर0 शर्मा के नेतृत्व में यहां पर विस्तृत उत्खनन करवाया था।

6. अयोध्या– वर्तमान अयोध्या नगरी, जो पूर्वांचल का एक जनपद भी है, गंगा की सहायक नदी सरयू (घाघरा) के तट पर अवस्थित है। पाणिनि की अष्टाध्यायी[9], योगिनीतंत्र[10], कालिकापुराण[11] तथा पद्म पुराण[12] में एक पवित्र नदी के रूप में सरयू का उल्लेख हुआ है। इसके अतिरिक्त रामायण, महाभारत, पुराण, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रन्थों में अयोध्या नगरी और सरयू नदी की चर्चा हुई है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

महाजनपद काल में अयोध्या कोशल महाजनपद की राजधानी साकेत के रूप में वर्णित मिलता है। पालिग्रन्थों के अनुसार बुद्धकाल में अयोध्या बौद्धधर्म से प्रभावित क्षेत्र के रूप में ख्याति प्राप्त कर रहा था। श्रेष्ठि कालक का वर्णन एवं नगर के एक सेठ द्वारा सुप्रसिद्ध वैद्य 'जीवक' को 1600 कार्षापणों की थैली भेंट करना, इस नगर पर बौद्ध प्रभाव एवं आर्थिक सम्पन्नता को प्रमाणित करता है।[13]

संयुक्त निकाय के फेण–सुत्त[14] में भगवान बुद्ध को अयोध्या में गंगा नदी के तट पर विहार करते देखते है। पालि साहित्य में वर्णित है कि अयोध्या निवासी लोगों ने गंगा के मोड़ पर एक विहार बनवाकर बौद्ध भिक्षु संघ को दान दिया था। यहां सम्भवतः 'गंगा का मोड़' उसे कहा गया है, जहां गंगा अपने मूल रूप में बक्सर (बिहार प्रान्त के एक जिले का नाम) से आगे जाकर उत्तर दिशा में मुड़कर सरयू नदी से मिलती है। बौद्ध विचारक वसुवन्धु, मैत्रेयनाथ इस अयोध्यानगरी से परिचित थे। यही नहीं, सौन्दरानन्द, बुद्धचरित तथा सारिपुत्र के रचयिता, बौद्ध साहित्य के अट्ठकथाकार बुद्धघोष की जन्मस्थली रही है। चीनी यात्री फाह्यान[15] एवं ह्वेनसांग ने भी इस नगर का विवरण अपने–अपने यात्रा–वृतान्त में दिया है। ह्वेनसांग लिखता है कि लोग इसे सूर्यवंशी राम की कुल–राजधानी मानते थे। वह बताता है कि महात्माबुद्ध के तीन माह के प्रवास करने तथा धर्मोपदेश देने के कारण लोग इसे पवित्र स्थल मानते थे।[16]

7. कुशीनगर– कुशीनगर 26.40 उत्तरी अक्षांश तथा 83.550 पूर्वी देशान्तर पर उत्तर प्रदेश के देवरिया जिला मुख्यालय से 35 किमी0 उत्तर पूर्व, पडरौना से दक्षिण–पश्चिम में लगभग 19 किमी0 एवं गोरखपुर जिला मुख्यालय से लगभग 55 किमी0 की दूरी पर स्थित कुशीनगर स्थल को 1961–62 ई0 में कनिंघम महोदय ने सीमित उत्खनन कार्य करवाने के पश्चात् इसे महात्मा बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली घोषित किया था। कालान्तर में 1876–77, 1877–78 ई0 में कालाईल ने यहाँ विस्तृत उत्खनन कराया, जिससे मुख्य स्तूप एवं बुद्ध परिनिर्वाण स्थली मूर्ति प्रकाश में आयी। इसका विस्तृत विवरण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्ट में (भाग 18 एवं 22 में विस्तार से) प्रकाशित है। इस रिपोर्ट के अनुसार दस फिट की गहराई में उत्खनन के बाद यह विलक्षण मूर्ति उपलब्ध हुई, जो वस्तुतः खण्डित अवस्था में थी। ऐसी मूर्ति का दर्शन अजन्ता की गुफा सं0 26 में किया जा सकता है।

कुशीनगर महात्मा बुद्ध के आविर्भाव के पूर्व से ही एक विख्यात नगर रहा है। रामायणकाल में इसे 'कुशावती' कहा जाता था। रघुवंशम्[17] में उल्लिखित है कि ''स्थिर बुद्धि वाले राम ने शत्रु रूपी हाथियों के लिए अंकुश के समान भयदायक कुश को कुशावती का राज्य दे दिया और मधुर वचनों से सज्जनों की आँखों से प्रेमाश्रु की धारा बहाने वाले लव को शरावती (श्रावस्ती) का राज्य दिया।'' डॉ0 राजबली पाण्डेय ने भी लिखा है कि जिस प्रकार चन्द्रकेतु के नाम पर चन्द्रकांता नगरी बसायी गयी थी, उसी प्रकार कुश के नाम पर कुशावती नगरी बसायी गयी थी। आज यह निर्विवाद सिद्ध है कि मल्ल राज्य की राजधानी कुशावती, कुशस्थली, कुशीनारा, कुशिग्रामक, कुशनगर वर्तमान कुशीनगर ही है।

बौद्ध गंथ दिव्यावदान[18] से ज्ञात होता है कि मौर्य सम्राट अशोक इस नगर में आया था, जहाँ महात्मा बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। इसकी पुष्टि अशोक के अभिलेखों से भी होती है। कुशीनगर के पूर्व में मल्लों का 'मुकुट बन्धन' नामक एक चौत्य था, जहाँ बुद्ध का अन्तिम संस्कार हुआ था।

कुशीनगर का मुख्य आकर्षण महापरिनिर्वाण मन्दिर एवं स्तूप है। यह धरातल से 2.75 मीटर ऊँचे विशाल चबूतरे पर है। इसके अन्दर लाल पत्थर की पीठिका पर बुद्ध की कलात्मक 20 फीट लम्बी प्रतिमा शयन मुद्रा में स्थापित है। प्रतिमा की पीठिका की लम्बाई 23' 9'' चौड़ाई 5' 6'' एवं ऊँचाई 1' 11'' है। सम्पूर्ण पीठिका सहित विशाल मूर्ति एक ही लाल प्रस्तर से निर्मित है। महात्मा बुद्ध कई बार कुशीनगर की यात्रा की थी और वे यहां के शालवन नामक विहार में ठहरते थे। इसी स्थान पर 483 ई0पू0 के लगभग 80 वर्ष की अवस्था में बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था। 1904–1907 तथा 1910–1912 ई0 में भारतीय पुरातत्व विभाग नई दिल्ली द्वारा किये गये उत्खनन के फलस्वरूप दो स्थानों से अवशेष मिले हैं – एक शालवन से, जहां भगवान महात्मा बुद्ध महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए थे और दूसरे मुकुटबन्धन चौत्य में, जहां उनका दाह संस्कार किया गया था। वर्तमान में परिनिर्वाण स्थल 'माथाकुँवर' नाम से तथा दूसरा स्थल 'रामभार का टीला' नाम से प्रसिद्ध है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Smith, Vincent A (1897). "The Birthplace of Gautama Buddha" The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britian and Ireland : 615-621.
2. सी–यू–कि प्प् पृष्ठ 13–14.
3. दीघनिकाय, परिनिब्बानसुत्त।
4. मच्छिमनिकाय ''धम्मचेतिय सुत्त, संयुक्त निकाय, 3.1।
5. धम्मपट्ठकथा, I, 414।
6. दीघनिकाय II पृष्ठ 80।
7. अंगुत्तर निकाय, 8.10।
8. ऋग्वेद, IV, 30, 18य X, 64, 9य ट, 53, 9।
9. अष्टाध्यायी 6, 4, 1, 74 (अग्रवाल, वी0एस0, पाणिनी कालीन भारतवर्ष पृ0 53)
10. योगिनी तन्त्र, 2.5।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

11. कालिकापुराण (अध्ययन 24, 139)
12. पद्मपुराण, उत्तरखण्ड 35–37.
13. मललसेकट, 1, 1086.
14. संयुक्त निकाय का फेण सुन्त.
15. लेग्गे, ट्रेवेल्स ऑफ फाह्यान, पृष्ठ सं0–54–55.
16. वाटर्स, ह्वेनसांग, 1, 354.
17. सनिवेश्य कुशावत्यां रिपुनागांकुशं कुशम् शरावत्यां सतां सूक्तैर्जनिता श्रुलव लवम्। –सर्ग 15, श्लोक 97 सीताराम चतुर्वेदी कालिदास ग्रंथावली (रघुवंश) अखिल भारतीय विक्रम परिषद, काशी, द्वि0सं0, वि0सं0 2001.
18. दिव्यावदान, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना, पृष्ठ 394.

*****